

सेहर व आसेब का  
रुहानी एलाज  
कुरआन व हदीस की  
दृष्टि में

संकलक  
मो: अय्युब उमरी

प्रकाशक  
फरेवाई एकेडमी, नई दिल्ली

तमाम अधिकार सुरक्षित हैं।

नाम किताब: सेहर व आसेब का रुहानी  
एलाज कुरआन व हदीस..  
नाम संकलक: मो: अय्यूब उमरी  
प्रकाशन वर्ष: जनवरी 2012  
मुफ्त वितरण के लिए: हाजी फ़कीर मो:रांदड़,  
माकराना की लागत पर  
मोबाइल न: 9829143359

मिलने के पते:

C-7/2, फरिवाइ एकादेमी, अबुल फज़ल  
इन्कलेव-11 नई दिल्ली-25  
फोन: 011.26945084, 26972365

अब्दुल हफ़ीज़, औम सिगनल, मकराना  
फोन: 9829143359

---

## तक़दीम

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान व अधिक रहम करने वाला है।

सभी प्रशंसा उस अल्लाह के लिए जो पूरी संसार का पालनेवाला है। और दरुद व सलाम हो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल-औलाद एवं उनके सभी साथियों पर।

जानना चाहिये कि कुरआन एवं हदीसों से जिन्नों शैतानों का पाया जाना सिद्ध है। इसी प्रकार यह

तथ्य भी सिद्ध है कि कभी-कभी इनके प्रकोप से मनुष्य को अधिक कष्ट व हानि पहुँचती है। इसी प्रकार मनुष्य पर जादू व बुरी नज़र का भी दुःश प्रभाव पड़ता है। परन्तु इनसे बचने के लिए कुछ सहज एवं सरल उपाय कुरआन व हदीस में बताए गए हैं, अगर मनुष्य इन सिद्धान्तों पर चले और पाबन्दी के साथ इन्हें पढ़े तो निश्चय उससे एवं उसके कुप्रभाव से बच सकता है।

इसी नीति को सामने रख कर हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए हिन्दी लिपि में मौलाना मौः अय्यूब

उमरी (सचिव दारुद दावा दिल्ली) ने कुरआन व हदीस में लिखी उन दुआओं एवं आयात को चुन-छंट कर संक्षिप्त एवं पुर्ण रूप से इस पुस्तक में इकत्र कर दिया है। यह दुआएँ सहीह हदीसों से साबित हैं। और इन पर पाबन्दी के साथ यत्न करना (अमल करना) बहुत ही सहज एवं सरल भी है।

सभी मनुष्य को लाभपहुंचाने के लिए फ़रिवाई एकेडेमी इसे प्रकाशित कर रहा है ताकि आधिक से अधिक लोगों के हाथों में पहुँचे और वे इसे पढ़कर लाभ उठाएँ।

अल्लाह से प्रार्थना है कि वे इस पुस्तक के मध्यम से लोगों को फाएदा पहुँचाए एवं उन चीज़ों के दुश प्रभाव से बचाए और जो लोग इससे किसी भी प्रकार से प्रभावित हैं उन्हें इससे मुक्ति प्रदान करे।  
आमीन

वस्सलाम  
नाचीज़  
रफ़ीक़ अहमद सलफ़ी

---

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

किसी भी दवा उपचार के विषय में हमें सर्वप्रथम यह सिद्धान्त अपने मस्तिस्क में अवश्य ही बैठा लेना है कि रोग मुक्त करना केवल अल्लाह का काम है और उसी की मर्जी से उपचार द्वारा लाभ प्राप्त हो सकता है, अगर व न चाहे तो कष्ट, हानि एवं रोग इत्यादि जो उसके भग्य में लिख दी गई है उसे कोई डाक्टर, वैध, हकीम एवं झाड़-फूँक करने वाला मुक्ति नहीं

दिला सकता और न ही कोई लाभ पहुँचा सकता है। इसी प्रकार अगर वह न चाहे तो कोई जिन्न व शैतान अथवा मनुष्य भी उसे कोई कष्ट या हानि नहीं पहुँचा सकता, इसी यकीन का दूसरा नाम “ईमान बिलक़्द्र” है। यानी भाग्य पर दृढ़ विश्वास है, जो प्रत्येक मुसलमानों के अकीदे का अटूट अंश है। इसी के फ़ल स्वरूप प्रत्येक मनुष्य को लाभ, हानि एवं प्रसन्नता, अप्रसन्नता प्राप्त होती है।



रुहानी इलाज जा मूल आधार करआनी आयात एवं सहीह हदीसों में बताई गई दुआओं द्वारा झाड़ फूँक है, इसी लिए हमें चाहिये कि इन दुआओं को पढ़ने और उन उपायों को करने के साथ-साथ ऐसे काम करें जिससे वह प्रसन्न हो और उसके द्वारा हमें उसकी निकटता प्राप्त हो, एवं प्रत्येक छण अपने जीवन का उसकी आज्ञापालन में लगाए रखें और उसकी प्रसन्न के कार्य करने का प्रयत्न करते रहें इस भय से कि कहीं उसकी

अप्रसन्नता से हमारा काम नष्ट  
न हो जाऐ।

अब जब यह सिद्ध हो गया  
कि केवल उसी के आज्ञानुसार  
लाभ व हानि पहुँचती है तो रोगी  
एवं झाड़-फूंक करने वाले दोनों  
ही हर समय उसकी आज्ञानुसार  
अपना जीवन बिताने का प्रयत्न  
करते रहें, अगर ऐसा न किया  
गया तो कभी भी कामयाबी नहीं  
मिल सकती।

---

वास्तविक रूप से रूहानी इलाज दो प्रकार से किया जाता है।

1. एक का संपर्क रोग लगने से पहने की अवस्था से है।
2. और दूसरे का संपर्क रोग के बाद की अवस्था से है।

हम सर्व प्रथम इस पुस्तक में उन दुआओं को लिख रहे हैं जिनको पाबन्दी से पढ़ने और उनका विर्द करने से मनुष्य हर प्रकार के आसेब, जादू-टोना एवं जिन्न व भूत के प्रकोप व उसकी ओर से पहुँचने वाली हानि एवं

कष्ट से अपने को बचा सकता है। अतः हमें अपने बचाव हेतु इन दुआओं को पढ़ते रहना चाहिए। वे क़रआनी आयात व दुआएँ यह हैं।

أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ  
الرَّجِيمِ، مِنْ هَمَزِهِ وَنَفْخِهِ وَ نَفْثِهِ-

अबूदाऊद (807), सहीह इब्ने  
हिब्बान (1779)

और केवल

“أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ”

भी पढ़ सकते हैं और अगर आप

चाहें तो यह दुआ भी पढ़ सकते हैं।

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ

الشَّيَاطِينِ ﴿٩٨﴾ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ

يَحْضُرُونِ ﴿٩٧﴾ [سورة المومنون: 97-98]

अर्थ:और दुआ करें कि ए मेरे परवरदिगार! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरा शरण चाहता हूं। और ए मेरे रब! मैं तेरा शरण चाहता हूं कि वह मेरे निकट आजाएँ।

इनके अतिरिक्त “आयतल  
कुर्सी” पढ़कर सूर्य इस्लाम  
(कुलहुवल्लाहु अहद) व  
मुअव्वजतैन (कुल अऊजु  
बिरब्बिन्नास-कुल अऊजु बिरब्बिल्  
फलक) तीन-तीन बार पढ़ें और  
दोनों हाथों में फूँक मार कर  
अपने सिर से पाँव तक पूरे शरीर  
पर हाथों को फेर लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु  
अलैहि वसल्लम ऐसा हि किया  
करते थे। ( बुखारी:5017)

इसके अतिरिक्त पूरी सूर्य  
बकरा या उसकी दो आखिरी

आयतें भी पढ़लें तो काफ़ी हो जाऐगा, अनेक सहीह हदीसों से यह सिद्ध है कि जिस घर या स्थान पर सूर्य बकरा पढ़ी जाती है तो वहां से जिन्न व भूत भाग जाता है।

इसी प्रकार से यदि कोई व्यक्ति निम्न दुआएँ को फ़ज्र की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ले तो संध्या तक और मग़रिब की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ले तो सुबह तक हर प्रकार के हानियों से बचा रहेगा।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ  
مَا خَلَقَ

(मुसलिम: 2708), (अबूदाऊद:  
3898)

अर्थ:-मैं अल्लाह के पुर्ण शब्दों  
द्वारा उसकी पूर्ण श्रृष्टि की बुराई  
से शरण चाहता हूँ।

أَبَانَ بْنَ عُمَانَ يَقُولُ سَمِعْتُ  
عُثْمَانَ ابْنَ عَفَّانَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ  
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مِنْ



قال ”بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ  
شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ“

(अबूदाऊद: 5088)

अर्थ:- अल्लाह के रसूल  
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने  
फ़रमाया जो व्यक्ति संध्या को  
तीन बार (अल्लाह के नाम से  
जिसके नाम के साथ पृथ्वी व  
आकाश की कोई चीज़ हानि नहीं  
पहुँचा सकती और वही सुनने  
वाला जानने वाला है) कहे तो

उसके साथ सुबह तक अचानक कोई घटना नहीं घटेगी, और जो कोई सुबह को तीन बार पढ़ले तो संध्या तक कोई घटना नहीं घटेगी।

\*\*\*

**आसेब पिड़ित रोगियों  
की चिकित्सा:**

निम्नलिखित आयतों को ताक  
(बिजोड़ अंक) एक, तीन, पांच,  
सात इत्यादि अंकों में अनेकबार  
पढ़कर रोगी पर फूंक मारे तो  
इन्शाअल्लाह अवश्य ही लाभ और  
सफलता प्राप्त होंग।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾ الرَّحْمَنِ  
الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٥﴾ إِيَّاكَ

نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿٦٥﴾ اِهْدِنَا  
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦٦﴾ صِرَاطَ الَّذِينَ  
أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ  
وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٦٧﴾ (سورة الفاتحة: 1-6)  
أَلَمْ يَهْدِنَا سَبِيلَ الذِّكْرِ الْكَبِيرِ لَا رَيْبَ فِيهِ  
هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ  
بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ  
يُنْفِقُونَ ﴿٦٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ  
إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ

يُوقِنُونَ ﴿٥﴾ أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّنْ  
رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

[سورة البقرة: 1-5]

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ  
سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَّ  
الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ  
وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ  
وَمَارُوتَ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ  
يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ

فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ  
الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ  
أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ  
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا  
لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ وَلَبِئْسَ مَا  
شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

[سورة البقرة:102]

وَالِهَکُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ  
الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ  
وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ  
بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ  
السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ  
مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ  
الرِّيَّاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ  
وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

[سورة البقرة: 163-164]

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا  
تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي  
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي  
يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ  
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ  
مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ  
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا  
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٥٠﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي  
الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ



يَكْفُرُ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنُ بِاللَّهِ فَقَدِ  
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا  
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٥﴾ وَاللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ  
آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ  
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ  
يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ  
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

﴿٢٥٥﴾ [البقرة 255-257]

أَمَّنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ  
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ  
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ  
رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ  
رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ  
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا  
مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا  
أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا  
كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا

وَلَا تُحْمَلُنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا  
وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا  
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

[سورة البقرة : 285-286]

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ  
وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ  
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

[سورة آل عمران: 18]

إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ  
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ  
اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُعْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ  
يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ  
مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ  
تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾ [سورة

الأعراف:54]

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ  
فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٥٥﴾ فَوَقَعَ

الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٧﴾  
فَعَلَّبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَاغِرِينَ ﴿١١٨﴾  
وَأَلْقَى السَّحْرَةَ سَاجِدِينَ ﴿١١٩﴾ قَالُوا آمَنَّا  
بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٠﴾ رَبِّ مُوسَى  
وَهَارُونَ ﴿١٢١﴾

[سورة الأعراف: 117-122]

فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ  
السَّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ  
عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٢٢﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ

بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ

﴿سورة يونس: 81-82﴾

وَنُنزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ

وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا

خَسَارًا ﴿سورة بني اسرائيل: 82﴾

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ

أَيَّامَاتٍ دَعَا فَلَهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُوا

بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ

سَبِيلًا ﴿سورة الحديد: 1﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ

وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ  
يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَكَبَّرَهُ تَكْبِيرًا ﴿١١٠﴾

[سورة بنى اسرائيل: 110-111]

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ﴿١٠٦﴾  
لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ  
وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ﴿١٠٧﴾

[سورة طه: 5-6]

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَعْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا وَمَا  
أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ

وَأَبْقَى ﴿٧٣﴾ [سورة طه: 73] وَعَنْتِ  
الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ  
حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ [سورة طه: 111]  
أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ  
إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٢﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ  
الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ  
﴿١١٣﴾ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا  
بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ



لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٥﴾ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ  
وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٦﴾

[سورة المومنون: 115-118]

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ﴿١١٧﴾ فَالزَّاجِرَاتِ  
زَجْرًا ﴿١١٨﴾ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ﴿١١٩﴾ إِنَّ  
إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿١٢٠﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ  
﴿١٢١﴾ إِنَّا زَيْنَا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِزِينَةِ  
الْكَوَاكِبِ ﴿١٢٢﴾ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ

مَارِدٍ ﴿١١﴾ لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى  
وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿١٢﴾ دُحُورًا  
وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ﴿١٣﴾ إِلَّا مَنْ خَطِفَ  
الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٤﴾  
فَاسْتَفْتَيْهِمْ أَيُّهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا  
إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ﴿١٥﴾ [سورة

الصفات: 1-11]

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ  
يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا

أَنْصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ  
مُنذِرِينَ ﴿٦٥﴾ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا  
كِتَابًا أَنْزَلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِمَا  
بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَىٰ الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقِ  
مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٦﴾ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ  
وَأْمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ  
وَيُجْرِكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ لَا  
يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي  
الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ أُولَٰئِكَ

فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٣﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ  
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْزُبْ  
بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ  
بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٤﴾ [سورة

الاحقاف: 29-33]

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ  
أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ  
﴿٣٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ  
فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا  
تُكذِّبَانِ ﴿٣٧﴾ [سورة الرحمن: 33-36]  
لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ  
لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ  
وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ  
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣٨﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا  
هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ  
الرَّحِيمُ ﴿٣٩﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّمِنُ  
الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا  
يُشْرِكُونَ ﴿٥٦﴾ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ  
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ  
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ  
الْحَكِيمُ ﴿٥٧﴾ [سورة الحشر: 21-24]  
قُلْ أَوْحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنْ  
الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ﴿٥٨﴾  
يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ

بَرَّبْنَا أَحَدًا ﴿٥٠﴾ وَأَنَّهُ تَعَالَى جَدُّ رَبِّنَا مَا  
اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ﴿٥١﴾ وَأَنَّهُ كَانَ  
يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ﴿٥٢﴾ وَأَنَا  
ظَنَّنَا أَن لَنْ نَقُولَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى  
اللَّهِ كَذِبًا ﴿٥٣﴾ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنْ  
الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ  
فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٥٤﴾ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا  
ظَنَنْتُمْ أَن لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٥٥﴾ وَأَنَا  
لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلْتَمِتًا حَرَسًا

شَدِيدًا وَشُهَبًا ﴿١٠﴾ وَأَنَا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا  
مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ  
شِهَابًا رَصَدًا ﴿١١﴾ وَأَنَا لَا نَدْرِي أَشَرُّ  
أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ  
رَشَدًا ﴿١٢﴾ [سورة الجن: 1-10]

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١٣﴾ لَا أَعْبُدُ  
مَا تَعْبُدُونَ ﴿١٤﴾ وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا  
أَعْبُدُ ﴿١٥﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ﴿١٦﴾



وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥٦﴾ لَكُمْ  
دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٥٧﴾

[سورة الكافرون: 1-6]

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ﴿١﴾ اللَّهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾  
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴿٣﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا  
أَحَدٌ ﴿٤﴾ [سورة الإخلاص: 1-4]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ  
مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ  
﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾ [سورة

الفلق: 1-5]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿٥﴾ مَلِكِ

النَّاسِ ﴿٥﴾ إِلَهِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿٥﴾ الَّذِي يُوَسْوِسُ

فِي صُدُورِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

﴿٥﴾ [سورة الناس: 1-6]

ऊपर लिखी कुरआनी आयात  
को पढ़ने के बाद दरुदे इब्राहीमी  
पढ़ें।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى  
آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ  
إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى  
مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ  
عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ -  
दरुद शरीफ़ पढ़ने के बाद  
निचे लिखी दुआओं को पढ़ें।

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللَّهِ الْعَظِيمِ الَّذِي لَيْسَ  
شَيْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ  
الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ وَبِأَسْمَاءِ  
اللَّهِ الْحُسْنَى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا  
لَمْ أَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبِرَّأٍ وَذَرَأٍ.

(موطأ: رقم الحديث 1753).

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ  
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيرٌ (صحيح بخاري: رقم الحديث  
2691) (ابوداود: رقم الحديث 5077)  
"أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ  
مَا خَلَقَ" (صحيح مسلم: رقم الحديث  
2708، ابوداود: رقم الحديث  
3898،

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ  
شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ  
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ. (ابوداود: 5088،

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا  
يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ  
وَذَرَأً وَبَرًّا وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ  
وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ  
فِي الْأَرْضِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا  
وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ  
كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ  
يَا رَحْمَنُ (مسند أحمد: رقم الحديث  
14914، المسند الجامع: 489/28)

ऊपर उल्लेख की गई कुरआनी आयात एवं सहीह हदीसों से साबित दुआओं को ऊँची आवाज़, पाक कपड़ों, पवित्र शरीर के साथ वजू करके पढ़ें। इनशाअल्लाह इन आयात एवं दुआओं के प्रभाव से जिन्न व भूत भाग जाऐगा और उसकी छाया भी समाप्त हो जाऐगी। प्रन्तू झाड़ फूँक करने वाला अपने बचाव हेतू सर्व प्रथम अपने ऊपर सूरह फ़ातिहा, मुअव्वज़तैन, आयतुल कुर्सी एवं सूरा बक़रा की प्राथमिक पांच आयतें और

अन्तिम की तीन आयात पढ़ कर अपने पूरे शरीर पर फूँक मार ले यदि चाहें तो अज्ञान द्वारा भी इन्हें भगाया जा सकता है। इसका तरीका यह है कि एक पाइप लेकर उसका एक किनारा रोगी के कान में लगा दें और दूसरे किनारे से आज्ञान पढ़ें और जब तक वह भाग न जाए उस समय तक अज्ञान पढ़ते रहें एवं रोगी को चारों ओर से इस प्रकार से पकड़ें, कि व इधर उधर भागने न पाए। और झाड़ फूँक करने वाला व्यक्ति उसकी गर्दन



पकड़ले ध्यान रहे कि पिड़ित की गर्दन को इतनी ज़ोर से न दबाएँ कि उसे किसी प्रकार की क्षति हो।

यह औराद व वज़ाइफ़ आसेब पिड़ित रोगियों के लिए बहुत लाभदायक और मुफीद हैं। ऐसा करने से पिड़ित को इनशाअल्लाह अवश्य ही लाभ होगा। अल्लाह तअला हर मुसलमान को शैतान के कुप्रभाव से बचाए। आमीन

حسبنا الله ونعم الوكيل-